

आरसी चौहान
बलिया उत्तर प्रदेश

ईश्वर की अनुपस्थिति में

ऐसी हो धरती
जहां भोरहरी किरणों सा मुलायम
और मां की ममता की तरह
पवित्र हों आदमी

उनके अकुलाए हाथ
बनाने में हों माहिर
खुशियों का मानचित्र

हवाओं को लपेट कर
रख सकें सिरहाने
ऐसा हुनर हो उनमें

जीवन के घाटों पर
बांट सके एक दूसरे का सुख दुख
और जुड़ा सकें एक ही छाया तले
ऐसी हो धरती
ईश्वर की अनुपस्थिति में।

धन्यवाद अक्षरों

'अ' को डाटेंगे जी भर आज
सबसे पहले दोषी है यह
मेरे कान उखड़वाने का

'क' भी कम कसूरवार नहीं है
मुझे डांट का ककहरा दिलाने में

कुछ अक्षर किसी अपराधी से
कम नहीं रहे मेरे जीवन में
जिनको बनाने में
मेरे हाथ की उंगलियां
ऐंठ जाती थी
जिनका विकृत रूप
आज भी भूला नहीं हूं
सबसे ज्यादा लट्ठ उन्हीं की वजह से पड़ा
मेरी पीठ पर

आज इन अक्षरों के जादूई बीज
मेरे जीवन में
खुशियों की नई उमंग
बो रहे हैं
अक्षरों के लिए कितना छोटा शब्द है, धन्यवाद...